"दिल्ली: भारत का हृदय"

HIN: 527

श्रेयांक: 2

स्नातकोत्तर कन (हिंदी प्रथम वर्ष)

"सनिष्का उल्हास नाइक"

अनुक्रमांक: 23PO140025

PR Number: 202009604

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रिल 2024

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO
PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

तारीख	दिन	जगह
20.3.2024	पहला दिन	• अक्षरधाम: स्वामीनारायण मंदिर • राष्ट्रपति भवन
21.3.2024	दूसरा दिन	• इंडिया गेट • लोटस टैंपल • ललित कला अकादमी • साहित्य अकादमी • संगीत अकादमी • हुमायूं का मकबरा • लक्ष्मी नारायण मंदिर
22.3.2024	तीसरा दिन	• हिंदू कॉलेज • दिल्ली विश्वविद्यालय • जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय • कुतुब मीनार
23.3.2024	चौथा दिन	• ताज महल • मथुरा • वृंदावन
24.3.24	पचवा दिन	• राजघाट • गांधी संग्रहालय • जामिया मस्जिद • उग्रसेन की बावली • लाल किला • बाल भवन • सरोजनी नगर मार्केट
25.3.24	चटा दिन	• लौटती ट्रेन

प्रस्तावना

सेमेस्टर मे हिंदी क्षेत्रों मे अध्ययन-यात्रा का पाठ्य शीर्षक को विस्तार से पढ़ने उधश्य से विश्वविद्यालय ने एक टूर का आयोजित किया था। योजना के अनुसार दिल्ली जाना था, जो भारत का दिल भी है। मैं उत्साहित थी क्योंकि मैं पहली बार इतने बड़े राज्य में जा रहा थी। टिकट बुक हो गए थे, हमने पैकिंग शुरू कर दी और 18 मार्च 2024 को दोपहर 3.30 बजे मडगांव रेलवे स्टेशन से हमारी ट्रेन थी, लेकिन ट्रेन 5:30 बजे तक देरी से आई, 5:30 बजे हम दिल्ली के लिए रवाना होगाए।

हमारी ट्रेन का नाम गोवा एक्सप्रेस था। हमरी यात्रा गोवा-कर्नाटक सीमा से गुजरते हुई शुरू हुई और हमने दूधसागर का दृष्य देखा फिर हम अपनी सीटों पर बैठ गए और हम एसी इकोनॉमी डिब्बे की कांच की खिड़कियों से दृश्य का पता लगा रहे थे।

हमने साथ में कार्ड, ऊनो, अंताक्षरी जैसे खेल खेले और फिर लंच किया।

रात में बहुत अधिक ठंड के कारण मुझे घुटन महसूस हुई लेकिन मेरे दोस्तों ने मेरी मदद की। हम महाराष्ट्र, गुजरात , राजस्थान , मधे प्रदेश जसे रजो से होते हौवे इस प्रकार हमने ट्रेन में 2 दिन की यात्रा पूरी की।

20 मार्च 2024 की सुबह हम निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर पहुंचे, वहां से हमने मेट्रो की सहायता ली जहा से हम नई दिल्ली पहुंचे।

यह महानगरीय शहर था, हालांकि मेट्रो स्टेशन पर हमें अनुभव हुआ कि हमें अपने भारी सामान के साथ भागना पड़ता था ताकि हम मेट्रो को मिस न कर सकें। हम सभी मेट्रो यात्रा देखने के लिए भी उत्साहित थे।हमारा होटल पहाड़गंज में था। हमने स्थानीय रिक्शा की मदत लेते हौवे होटल तक पाहुचे। फिर हम शाम को और राश्रपति भवन ढेकने निकाल गए।

20 मार्च 2024

20 मार्च 2024 की शाम को फ्रेश होने के बाद हम मेट्रो से घुमने के लिए रवाना हुए।

स्वामीनारायण मंदिर

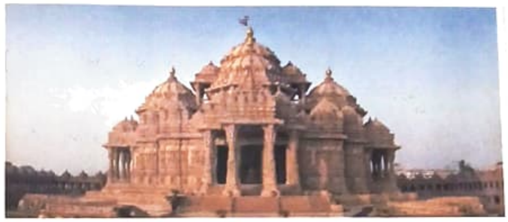

अक्षरधाम' का अर्थ है भगवान का दिव्य निवास। इसे भक्ति, पवित्रता और शांति का शाश्वत स्थान माना जाता है। नई दिल्ली में स्वामीनारायण अक्षरधाम एक मंदिर है - भगवान का निवास, एक हिंदू पूजा घर और भक्ति, शिक्षा और सद्भाव के लिए समर्पित एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परिसर। कालातीत हिंदू आध्यात्मिक संदेश, जीवंत भक्ति परंपराएं और प्राचीन वास्तुकला सभी इसकी कला और वास्तुकला में प्रतिबिंबित होती हैं। यह मंदिर हिंदू धर्म के अवतारों, देवों और महान संतों, भगवान स्वामीनारायण को एक विनम्र श्रद्धांजलि है। पारंपरिक शैली वाले परिसर का उद्घाटन परम पूज्य स्वामी महाराज के आशीर्वाद और कुशल कारीगरों और स्वयंसेवकों के समर्पित प्रयासों के माध्यम से 6 नवंबर 2005 को किया गया था।

अक्षरधाम का प्रत्येक तत्व आध्यात्मिकता से गूंजता है - मंदिर, प्रदर्शनियाँ और यहाँ तक कि उद्यान भी।

अक्षरधाम मंदिर में दो सौ से अधिक मूर्तियाँ हैं, जो कई सहस्राब्दियों से कई आध्यात्मिक दिग्गजों का प्रतिनिधित्व करती हैं। अक्षरधाम का आध्यात्मिक आधार यह है कि प्रत्येक आत्मा संभावित रूप से दिव्य है। चाहे हम परिवार की सेवा कर रहे हों, देश की, पड़ोसियों की या दुनिया भर के सभी जीवित प्राणियों की, प्रत्येक सेवा व्यक्ति को देवत्व की ओर

राष्ट्रपति भवन

राष्ट्रपति भवन,

रायसीना हिल, नई दिल्ली, भारत केपश्चिमी छोर परभारत के राष्ट्रपतिकाआधिकारिक निवासब्रिटिश साम्राज्यके चरम के दौरान किया गया था।

राष्ट्रपति भावन हमे भर शे डिकाया गया था लेकिन हमे वो ढेक खे ही अनुभव हुआ की वो कितना विशाल कई इमारत है । हमे बस महे भार से ही दो चक्कर लगाए उसम्हे हम ने पुरानी परलीमेंट इमारत और उसके सामने ही नयी परलमेंट बिल्डिंग बनाई गयी है और हमने वह पे भिच महे एक फावरा ढेका और शाम के वक्त पे इस इमारत फे रास्तरिए जंडे का तीनों रन की विज्वल धिकाई गयी थी ।

<u>मेरा अनुभव</u> :-

मंदिर में हमें फोन ले जाने की अनुमति नहीं थी, लेकिन हमने इसकी सुंदरता को अपने मन में कैद कर लिया। हमने अंदर प्रार्थना की, हमने स्वामी नारायण के शरीर के अंगों जैसे दांत के नाखून आदि के संरक्षक देखे।सवामिनारयन जी के अंग के हीसो को जियसे की नाखून दांत बाल और कपडोको स्मभा के रखा ज्ञ था । उदय हमे विशाल काइए चित्रा काला भी डिकाई गयी थी जो उनके जीवन भर महे बनाई गयी थी । मंदिर में छोटे बच्चों के लिए खेलने के लिए अलग से पार्क था। भगवान का प्रसाद एक व्यापार के रूप में बनाया गया था और मेले की तरह खाने-पीने की दुकानें थीं। बहुत मेहनत और विस्तृत डिजाइन के साथ शानदार वास्तुकला मन को मोह लेने वाली थी और वहां सुंदर फूल और पक्षि बहुत सुंदर थे और बाद में हम राष्ट्रपति भवन की और आए ,हमने राष्ट्रपति भवन को बाहर से देखा जिसे देखकर हमें बहुत अच्छा वातावरण मिला।

21 मार्च 2024

21 मार्च 2024 दूसरे दिन सुभे जल्दी हम इंडिया गेट, लौटस मंदिर, ललित काला अकेडमी, साहित्य अकेडमी, संगीत अकेडमी, हुमायु तोंब, लक्ष्मी नारायण मंदिर जैसे स्थानो पर गये।

इंडिया गेट

इण्डिया गेट, नई दिल्ली के दिल रखा गया एक महान स्मारक है जो याद करने और रसतृभकती का प्रतीक है 20 वी सदी की शुरुआत में बनाया गया, यह प्रथम विश्व युद्ध और तीसरी अंग्रेज-अफगान युद्ध में अपनी जान गंवाने वाले भारतीय सैनिकों की स्मृति में निर्मित है। इसे प्रसिद्ध ब्रिटिश वास्तुकार सर एडविन लूट्यन्स ने डिज़ाइन किया था, और यह पेरिस के आर्क डे ट्रियंफ की प्रेरणा से प्रेरित है। इसकी ऊंचाई 42 मीटर है।

इसे सन् १९३१ में बनाया गया था। मूल रूप से अखिल भारतीय युद्ध स्मारक के रूप में जाने वाले इस स्मारक का निर्माण शाहि नेपाल सरकारल द्वारा उन ९०००० भारतीय सैनिकों की स्मृति में किया गया था जो ब्रिटिश सेना में भर्ती होकर प्रथम विश्वयुद्ध और अफ़ग़ान युद्धों में शहीद हुए थे।

यूनाइटेड किंगडम के कुछ सैनिकों और अधिकारियों सहित 13,300 सैनिकों के नाम, गेट पर उत्कीर्ण हैं। लाल और पीले बलुआ पत्थरों से बना हुआ यह स्मारक दर्शनीय है।

जब इण्डिया गेट बनकर तैयार हुआ था तब इसके सामने जार्ज पंचम की एक मूर्ति लगी हुई थी। जिसे बाद में ब्रिटिश राज के समय की अन्य मूर्तियों के साथ कोरोनेशन पार्क में स्थापित कर दिया गया। अब जार्ज पंचम की मूर्ति की जगह प्रतीक के रूप में केवल एक छतरी भर रह गयी है।

वॉर मेमोरियल

स्मारक को इंडिया गेट के पास मौजूदा छतरी के आसपास बनाया गया है। स्मारक की दीवार को जमीन के साथ और मौजूदा सौंदर्यशास्त्र के साथ सामंजस्य स्थापित किया है।1947-48, 1961 (गोवा), 1962 (चीन), 1965, 1971, 1987 (सियाचिन), 1987-88 (श्रीलंका), 1999 (कारगिल), और युद्ध रक्षक जैसे अन्य युद्धों में शहीदों के नाम इस प्रकार आजादी के बाद शहीद हुए १३,३०० भारतीय सैनिकों के नाम यहां पत्थरों पर लिखे गए हैं।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक 25 फरवरी 2019 को बनाया गया था।

इसकी नींव भारत सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा रखा गया।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक हमारे उन सभी वीर को हमारे उन सभी वीरों को श्रद्धांजलि देता है जो युद्ध में अपना बलिदान दे चुके हैं। राष्ट्रीय युद्धस्मारक दिल्ली में स्थित इंडिया गेट पर बनाया गया है।

आज इस राष्ट्रीय युद्ध स्मारक, को बने हुए 3 साल हो चुके है साथ ही 22 जनवरी 2022 को यह भी ऐलान हुआ की अमर जवान ज्योति अब से राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में ही जलाई जाएगी और यह पूरा कार्यक्रमवायु वायु सेना के ऑफिसर बलभद्र राधाकृष्णन की अध्यक्षता में किया गया।राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के आर्किटेक्चर श्री योगेश चंद्र हसन जी हैं।

लौटस मंदिर

लोटस टेंपल, भारत में दिल्ली में स्थित है, एक बहाई हाउस ऑफ उपासना है जो दिसंबर 1986 में समर्पित की गई थी, जिसकी लागत 10 मिलियन थी।

अपनी फूलों जैसी आकृति के लिए उल्लेखनीय, यह शहर में एक प्रमुख आकर्षण बन गया है। धर्म के सभी बहाई घरों की तरह, लोटस टेम्पल सभी के लिए खुला है, धर्म या किसी अन्य योग्यता की परवाह किए बिना।

2001 की सीएनएन रिपोर्ट ने इसे दुनिया की सबसे ज्यादा देखी जाने वाली इमारत बताया। कमल मंदिर नेहरू प्लेस के पास स्थित है और कालकाजी मंदिर मेट्रो स्टेशन सिर्फ 500 मीटर की दूरी पर है। यह मंदिर नई दिल्ली, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली के बहापुर गाँव में है। वास्तुकार एक ईरानी, फारिबोरज़ साहबा थे जो अब कनाडा में रहते हैं।

लोटस टेम्पल को डिजाइन करने के लिए 1976 में उनसे संपर्क किया गया था और बाद में इसके निर्माण की देखरेख की गई थी।

18 महीने के दौरान यूके की कंपनी फ्लिंट और नील द्वारा संरचनात्मक डिजाइन तैयार किया गया था, और निर्माण लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के ईसीसी कंस्ट्रक्शन ग्रुप द्वारा किया गया था। इस भूमि को खरीदने के लिए आवश्यक धनराशि का बड़ा हिस्सा हैदराबाद, सिंध के अरदीश रुस्तमपुर द्वारा दान में दिया गया था।

जिसने 1953 में इस उद्देश्य के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया। निर्माण बजट का एक हिस्सा बचाया गया और स्वदेशी का अध्ययन करने के लिए ग्रीनहाउस का निर्माण किया गया। पौधे और फूल जो साइट पर उपयोग के लिए उपयुक्त होंगे।

ललित काला अकादमी

संगीत, कला, वाणी, मातृत्व, आध्यात्मिकता, विद्या, ज्ञान, ग्रंथ, मन्त्र, तंत्र , ज्ञान, विद्या और नदियों की अधिष्ठात्री देवी; मंत्र (दक्षिण मार्ग/वैदिक मार्ग) और तंत्र(वाम मार्ग) की देवी पेड़ के नीचे मां सरस्वती की प्रतिमा की पूजा कर रहे श्रद्धालु

काला अकादमी

यहा पे हमे तारा तारा के पुराने नृत्य के बारे महे पता चला जो देश भर महे प्रस्तुत किए जाते ते है । हमे यहा पे परंपरागत म्हुखोते ढेके जो भारत देश के विबिन हीसो महे पेने जाते है ।

छाउ नृत्य भारत में जनजातीय नृत्य का एक लोकप्रिय रूप है जो मार्शल आर्ट के तत्वों को अपने आंदोलनों में शामिल करता है ।

17वीं शताब्दी के मानवेदन नामक सामूतिरि राजा द्वारा प्रस्तुत दृश्यकला कृष्णनाट्टम कहलाती है। मानवेदन ने श्रीकृष्ण कथा को आधार बनाकर संस्कृत में 'कृष्णगीति' नामक दृश्यकाव्य की रचना की थी।

यह कथा अभिनय की दृष्टि से भी श्रेष्ठ थी। इसके अंतर्गत अवतारम्, कालिय मर्दनम्, रासक्रीडा, कंसवधम्, स्वयंवरम्, बाणयुद्धम्, विविधवधम्, स्वर्गारोहणम् नामक कथाएँ आती हैं, जिनकी प्रस्तुति आठ दिनों तक चलती है।

संगीत अकादमी

यहा फे हमने हाए तरके पुराने संगीत महे जो इस्तमल किए जाते है जियसे की विना डमरू ढ़ोल और भी विबिन तरके म्यूज़िकल इन्स्तृमेन धिकाई दिये ।

यहा पे देश के हर कोने का एक डमरू और एक ढ़ोल था और वेसे ही सितार औ नहजने कोन से कोन से म्यूज़िकल इन्तृमेंट पाये जाते है ।

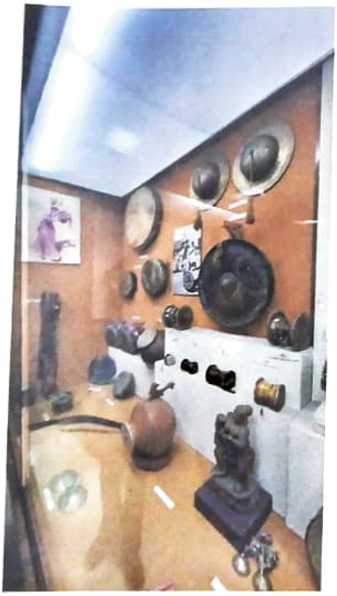

तानपुरा आमतौर पर तीन मुख्य प्रकार के होते हैं; इन्हें नर, मादा और वाद्य तानपुरा के नाम से जाना जाता है।

ड्रम, संगीत वाद्ययंत्रों के एक ऐसे तालवाद्य (परकशन) समूह का एक सदस्य है जिन्हें तकनीकी दृष्टि से झिल्लीयुक्त वाद्ययंत्र के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

साहित्य अकादमी

भारत की साहित्य अकादमी भारतीय साहित्य के विकास के लिये सक्रिय कार्य करने वाली राष्ट्रीय संस्था है। इसका गठन १२ मार्च १९५४ को भारत सरकार द्वारा किया गया था। रंग प्रसग,संगीतिका,रूरलेट, एक महिला के रूप में बड़ी होना जेसे और भी कितभे है यहा । यहा पे नाटक महे

संगीता ,रंगयान,संगीत ,संस्कृतिक ,ज्ञान्त ,संगीत नाटक और नर्दना नाटक की कितभे थी ।

और कोंकणी क्षेत्र कल , हवा और चोदमों , फतोर पिग्ल्चो वेल , यस्ताव्यरत बायलो

बागराचे सुकणे, राजबाठे लेखसंगत, बोळयांतल किशोर,और एकरी एक कविता के कितभे मौजे यहा पे डिकी ।

राजस्थानी किटभो मेह व्यांणबीण - कमीरान, चाजणी शन से अंधारो, धंवशी कार्य, ओख रो किरकरा,आधुनिक भारतीय जेसे मौजे कितभे इस साहित्य अकेदमे महे मिली यह फे मौजे अपने पड़ने कीलिए एक सदन उप्योग हुआ ।

हुमायु तोंब

हुमायूँ का मकबरा इमारत परिसर मुगल वास्तुकला से प्रेरित मकबरा स्मारक है। यह नई दिल्ली के दीनापनाह अर्थात् पुराने किले के निकट निज़ामुद्दीन पूर्व क्षेत्र में मथुरा मार्ग के निकट स्थित है। गुलाम वंश के समय में यह भूमि किलोकरी किले में हुआ करती थी और नसीरुद्दीन (१२६८-१२८७) के पुत्र तत्कालीन सुल्तान केकूबाद की राजधानी हुआ करती थी।

यहाँ मुख्य इमारत मुगल सम्राट हुमायूँ का मकबरा है और इसमें हुमायूँ की कब्र सहित कई अन्य राजसी लोगों की भी कब्रें हैं।

यह समूह विश्व धरोहर घोषित है, एवं भारत में मुगल वास्तुकला का प्रथम उदाहरण है। इस मक़बरे में वही चारबाग शैली है, जिसने भविष्य में ताजमहल को जन्म दिया।

यह मकबरा हुमायूँ की विधवा बेगम हमीदा बानो बेगम के आदेशानुसार १५६२ में बना था।इस भवन के वास्तुकार सैयद मुबारक इब्न मिराक घियाथुद्दीन एवं उसके पिता मिराक घुइयाथुद्दीन थे जिन्हें अफगानिस्तान के हेरात शहर से विशेष रूप से बुलवाया गया था। मुख्य इमारत लगभग आठ वर्षों में बनकर तैयार हुई और भारतीय उपमहाद्वीप में चारबाग शैली का प्रथम उदाहरण बनी। यहां सर्वप्रथम लाल बलुआ पत्थर का इतने बड़े स्तर पर प्रयोग हुआ था। १९९३ में इस इमारत समूह को युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

इस इमारत में मुगल स्थापत्य में एक बड़ा बदलाव दिखा, जिसका प्रमुख अंग चारबाग शैली के उद्यान थे। ऐसे उद्यान भारत में इससे पूर्व कभी नहीं दिखे थे और इसके बाद अनेक इमारतों का अभिन्न अंग बनते गये। ये मकबरा मुगलों द्वारा इससे पूर्व निर्मित हुमायुं के पिता बाबर के काबुल स्थित मकबरे बाग ए बाबर से एकदम भिन्न था। बाबर के साथ ही सम्राटों को बाग में बने मकबरों में दफ़्न करने की परंपरा आरंभ हुई थी।

अपने पूर्वज तैमूर लंग के समरकंद (उज़्बेकिस्तान) में बने मकबरे पर आधारित ये इमारत भारत में आगे आने वाली मुगल स्थापत्य के मकबरों की प्रेरणा बना। ये स्थापत्य अपने चरम पर ताजमहल के साथ पहुंचा।

लक्ष्मी नारायण मंदिर

लक्ष्मी नारायण मंदिर बिडला मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित यह मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है।

इसका निर्माण १९३८ में हुआ था और इसका उद्घाटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था। बिड़ला मंदिर अपने यहाँ मनाई जाने वाली जन्माष्टमी के लिए भी प्रसिद्ध है।

सके अलावा यहां नवरात्रि और दीपावली के समय भी काफी आयोजन किये जाते हैं। दीपावली पर मंदिर की साज सज्जा देखने लायक होती है।

लक्ष्मी नारायण, शंकर पार्वती विष्णु, राम सीता की पुजा होती है।

मेरा अनुभव :-

जैसे हि हम इंडियन गते पे पोछे हमे बोहत बीड ढीकी उदार हमने अमर ज्योति ढेकी जो हमे बताया गया हे की की कभी नहीं बुज ती और जवानोके नाम जो लड़ाई महे शहीद होगये है और जितने भी जंग जो लड़े गये थे अब तक उदार हमने फूल और पंची ढेके और उधर एक आदमी पुतले की तरा लहाड़ा रहता है जो कभी नहीं हिलता वहा से । इंडियन गते की उचाई ढेके चौक गये जब हम वार मेमोरियल प्लेस पे पहोचे हमे उधर देश भक्ति का भी अनुभव हुई ।

जितेन भी जवान जो जंग लड़ने गये और वापस नहीं आये हमे हमदर्दी है उनसे । जब हम लोटस टेम्पल पहोचे थाब हमे अंदर लेके गये और वहा पे 5 मिन के लिए बेट्या गया वहा हमे इस भीड़ बहरी दुनिया महे शांति महसूस हुई लोटस टेम्पल धिक्मे महे सुंदर और आकर्षित था ।

ललित कला अकेडमी महे अहम तरा तरा के नकाब ढेकने मिले जो ट्रेडिशनल डांस और कला कीर्तियों महे इस्तेमल किये जाते है । जैसेही हम साहित्य अकेडमी महे पहोचे हमे हर तरकी भाषा के कितभे और नाटक की किताबे ढेकी जिसने हमे प्रेणा मिली ।उसके बड़ हम संगीत अकेडमी महे गये वहा के म्यूजिकल इंड्रमेंर इतने सुंदर थे और मधुर भी थे।हुमायु टॉब्ब हमे बतया गया थात की पुरा गोवा कवर होजायेगा लेनकिन मजे लगा की ये सिर्फ अपना नम बांये रकने केलिए बनया था । लक्ष्मी नारायण मंदिर महे बहोत सरे भक्ति की महसू की ।

22 मार्च 2024

22 मार्च 2024 तीसरे दिन शुबे चाय नाश्ता करके हम हिन्दू कॉलेज ,दिल्ली यूनिवरसिटि , जवाहरलाल नेहरू यूनिवरसिटि और कुतुब मीनार ढेकने निकाल गए।

हिन्दू कॉलेज

हिन्दू कॉलेज, दिल्ली भारत के कुछ सबसे पुराने व प्रसिद्ध महाविद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना 1899 में हुइ थी। यह दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है।

स्थापित, यह भारत में कला और विज्ञान के लिए सबसे पुराने कॉलेज में से एक है। यह विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य में स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रदान करता है। 2020 में, इसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार) के तहत राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान दिया गया है। इसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा जैव प्रौद्योगिकी विभाग के लिए 'स्टार कॉलेज' का दर्जा दिया गया है। कॉलेज ने कानून,

अर्थशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान, व्यवसाय, दर्शनशास्त्र, साहित्य, मीडिया, सिनेमा, सैन्य, खेल और राजनीति के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय पूर्व छात्रों का निर्माण किया है। हिंदू कॉलेज में इसके नाम के बावजूद सभी धर्मों के छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। केयरभर को नोटिस बोर्ड पर लगा दिया जाता था। वार्षिक समारोह "मक्का भूमि पर आयोजित किया जाता है। धर्म की रक्षा करें और धर्म आपकी रक्षा करेगा" ईस प्रकार दीवार पर लिखा हुआ था। भाषा प्रयोगशाला, खेल परिसर है। उत्तीर्ण छात्र जिन्हें बहुत सफलता मिली है जैसे

अभिनेता राजेश कुमार, रोशन अब्बास, विशाल भरतवाज, ऐश्वर्या सखिया, त्समा चोपड़ा आदि।

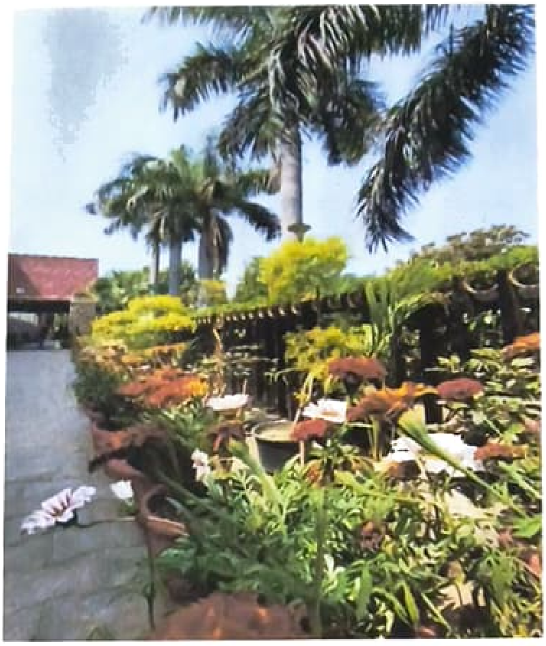

सांगानेरिया ऑडिटोरियम बी सीएलजी इतिहास: उन्हें विपरीत सीएलजी सेंट में प्रवेश नहीं मिला था। निम्न जाति के बीजेड इसलिए उन्होंने एक ऐसा सीएलजी बनाने का फैसला किया जहाँ हर छात्र समान रूप से पढ़ सके। सीएलजी को ए+ में स्थान दिया। हस्तनिर्मित पत्रिका 'हश्ताक्षर' छात्रों ने इसे सिल दिया। 100 वर्ष पूरे होने पर सीएम अबुल कलाम ने बयान दिया था इसे हेरिटेज सीएलजी के रूप में भी जाना जाता है हर साल उन्हें बहस का सामना करना पड़ता है। हिंदू जीवन शैली का दमन किया है।

दिल्ली यूनिवरसिटि

दिल्ली विश्वविद्यालय देश का एक प्रमुख विश्वविद्यालय है, जिसे उच्च शैक्षणिक मानकों, विविध शैक्षिक कार्यक्रमों, प्रतिष्ठित संकाय, शानदार पूर्व छात्रों, विभिन्न सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों और आधुनिक बुनियादी ढांचे की एक सम्मानित विरासत और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा प्राप्त है।

विश्वविद्यालय ने अपने अस्तित्व के अनेक वर्षों में, उच्चतम वैश्विक मानकों और उच्च शिक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं को कायम रखा है। राष्ट्र निर्माण की इसकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का दृढ़ता से पालन करने की सदिच्छा इसके आदर्श वाक्य: 'निष्ठा

धृति सत्यम्' (समर्पण, स्थिरता और सत्य) में परिलक्षित है।

वर्ष 1922 में तत्कालीन केंद्रीय विधान सभा के अधिनियम द्वारा एकात्मक, शिक्षण और

आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित, इस विश्वविद्यालय की शिक्षण, अनुसंधान और सामाजिक पहुँच में उत्कृष्टता के लिए एक सुदृढ़ प्रतिबद्धता ने विश्वविद्यालय को अन्य विश्वविद्यालयों के लिए आदर्श और पथ प्रदर्शक बना दिया है।

भारत के राष्ट्रपति विश्वविद्यालय के विजिटर, उप-राष्ट्रपति इसके कुलपति और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश विश्वविद्यालय के सम-कुलपति हैं। तीन महाविद्यालयों और 750 छात्रों के साथ प्रारंभ किया गया, यह विश्वविद्यालय 16 संकायों, 80 से अधिक शैक्षणिक विभागों, महाविद्यालय की समान संख्या और सात लाख से अधिक छात्रों सहित भारत के सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक के रूप में विकसित हुआ है।

जवाहरलाल नेहरू यूनिवरसिटि

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय भारत के नई दिल्ली में स्थित एक प्रसिद्ध सार्वजनिक विश्वविद्यालय है। 1969 में स्थापित, यह भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर समर्पित है। को उच्च शैक्षिक उत्कृष्टता, शोध और सामाजिक समावेशपन पर मजबूत जोर है। यह विभिन्न क्षेत्रों में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रदान करता है, समाजशास्त्र, मानविकी, प्राकृतिक विज्ञान, और भाषाओं में समाविष्ट है। अपने जीवंत बौद्धिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है, जो विचारशीलता और विद्वानों के बीच बहुमूल्य बहस को प्रोत्साहित करता है। इसके उदार और राजनैतिक छात्र समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण पहचान है, जो भारत के शैक्षिक और राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

जजेएनयू अभी एक युवा विश्वविद्यालय है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की शक्ति, तथा यह कि विचारों की विविधता बौद्धिक अन्वेषण के आधार हैं। जेएनयू बौद्धिक रूप से बेचैन, संतुष्ट न होने वाले जिज्ञासु और मानसिक रूप से कठोर लोगों के लिए ऐसा स्थान है जो उन्हें रमणीय स्थल की शांति के बीच आगे बढने का मौका देता है। यह रमणीय स्थल भारत की राजधानी की चहल-पहल और भीड़ भाड़ के बीच हराभरा क्षेत्र है।

जब हम वह पे पोचे तब इलैक्शन का समय था ठो उदार भोत ही कड़ी प्रबंदी थी। जवाहला न्हेरु यूनिवरसिटि इलैक्शन कमिसिन का हैड कैंटरे हैंता है असे हमे बतया गया था।

विश्वविद्यालय की स्थापना में अंतर्निहित नेहरूवादी उद्देश्य–'राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता, जीवन का लोकतांत्रिक तरीका, अंतरराष्ट्रीय समझ और पुस्तकालय देश के सबसे बड़े पुस्तकों के सग्रह में से एक हैं जिसमें ५ लाख पुस्तकें एवं ५०००० से अधिक संस्करण संग्रहित हैं। यह विभिन्न विषयों से संकाय एवं छात्रो के सुझावों के माध्यम द्वारा प्रत्येक वर्ष औसतन १०००० पुस्तकों को शामिल करता है। यह आवश्यकता के अनुसार पुस्तकों के संस्करणों को दोहराता रहता है।

कुतुब मीनार

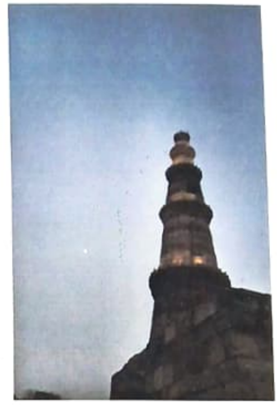

कुतुब मीनार भारत में दक्षिण दिल्ली शहर के महरौली भाग में स्थित, ईंट से बनी विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। यह दिल्ली का एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। इसकी ऊँचाई 73 मीटर और व्यास १४.३ मीटर है, जो ऊपर जाकर शिखर पर 2.75 मीटर (9.02 फीट) हो जाता है।

इसमें ३७९ सीढियाँ हैं। मीनार के चारों ओर बने अहाते में भारतीय कला के कई उत्कृष्ट नमूने हैं, जिनमें से अनेक इसके निर्माण काल सन 1192 के हैं।

यह परिसर युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में स्वीकृत किया गया है। कहा जाता है कि ये मीनार पास के 27 किला को तोड़कर और दिल्ली विजय के उपलक्ष्य मे किला के मलबे से बनाई गयी थी। इसका प्रमाण मीनार के अंदर कुतुब के चित्र से मिलता है।

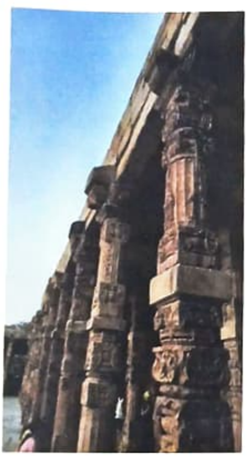

एक स्थान के अनुसार ये मीनार वराहमिहिर का खगोल शास्त्र वेधशाला थी। कुतुब मीनार परिसर में एक कुतुब स्तंभ भी है जिसपर जंग नही लगती है। इसे आप नीचे फोटो मे देख सकते है।

कुतुब मीनार भारत के राजधानी दिल्ली में एगो इतिहासी बिल्डिंग बाटे। ई यूनेस्को द्वारा बिस्व धरोहर स्थल के दर्जा वाली बिल्डिंग बा। कुताब मीनार, एगो मीनार हवे आ ई एगो लोहा के बनल "विक्ट्री टावर" (बिजय स्तंभ) के साथे कुतुब परिसर के हिस्सा हवे जे दिल्ली के सभसे पुरान किलेबंदी वाला शहर लाल कोट के जगह पर पड़े ला जेकर स्थापना तोमर राजपूत लोग कइले रहल।

ई भारत के दक्खिन दिल्ली के मेहरौली इलाका में यूनेस्को के बिस्व धरोहर स्थल बाटे। ई शहर के सभसे ढेर घूमे वाला पर्यटन स्थल सभ में से एक हवे, एकर ज्यादातर हिस्सा 1199 से 1220 के बीच बनल।

एकर तुलना अफगानिस्तान के 62 मीटर के ऑल-ब्रिक (पूरा ईंटा से बनल) मीनार ऑफ जाम से कइल जा

सकेला, जवन लगभग 1190 में बनल, जेकर निर्माण कुतुब के संभावित सुरुआत से एक दशक पहिले भइल।[8] दुनों के सतह सभ के शिलालेख आ ज्यामितीय पैटर्न से बिस्तार से सजावल गइल बा।

कुतुब मीनार में एगो फोंफर शाफ्ट बाटे जे हर स्टेज के ऊपरी हिस्सा में "बालकनी सभ के नीचे शानदार स्टेलेक्टाइट ब्रैकेटिंग" के साथे खुलता बाटे।

आमतौर पर भारत में मीनार सभ के इस्तेमाल इतिहास में धीमा रहल बाटे आ अइसन मीनार अक्सर मुख्य मस्जिद से अलगा मौजूद बाड़ें।

मेरा अनुभव:-

हिन्दु कॉलेज की शिक्षा प्रणाली मुझे भूत अच्छे लगी वहा का संरचा भी किसी 5 स्टार होटले से काम नाही थी उसर शे हम् दिल्ली यूनिवर्सिटी महे प्रवेश उवे वाहा फोए इतनी कड़ी प्रबहंदी थी की मुझे दर लगने लगा की कही हमला नाह हो वहा का वातावरुण भी बहोत अच्छा थात वाहा से हम जवाहलर नेहरू यूनिवर्सिटी महे आये व्हा पे इलेक्शन के तेरी हो रही थी जिसमे सबसे ज्यादा कड़ी सुरक्षा का फरबंद किया गया थात व्हा की पुस्तकलाई बहोत बड़ा थात 10 मजिला ये पुस्तकलाई जो सल महे सिर्फ 3 बर हि बंद होता है जो है 26 जानूरे , 15 अगस्त और 2 ओक्टुम्बर दहा से हम कुटुब मीनार की और गये वो इतना लम्बा था जो मजे ढेक कर चौकाने वाला एहसा हुवा उदार हम्हे सूर्य अस्त देखा। कुटुब मीनार के ऊपर जो देसिंग बहोत अच्छा बनया हुवा था । उदार हमने पोपट और कबूतर भे ढेके वाहा छोटे बचे सिग्नल पे गुलाब के फूल भेच रहे ते मुझे ये ढेक कर मन को थोड़ा बूर लगा ।

ताज महल

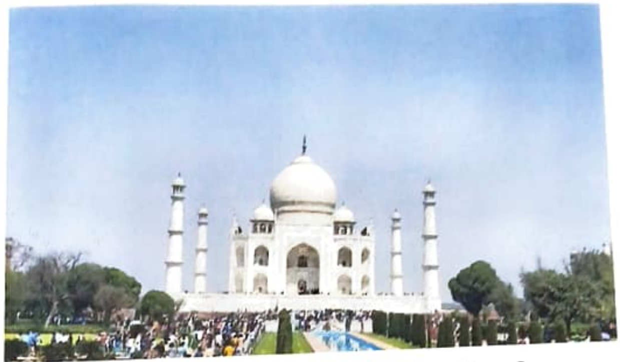

ताजमहल भारतीय शहर आगरा में यमुना नदी के दक्षिण तट पर एक हाथीदांत-सफेद संगमरमर का मकबरा है। इसे 1632 में मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा अपनी पसंदीदा पत्नी मुमताज महल की मकबरे के लिए शुरू किया गया था।

मकबरा 17-हेक्टेयर (42 एकड़) परिसर का केंद्रबिंदु है, जिसमें एक मस्जिद और एक गेस्ट हाउस शामिल है, और इसे तीन तरफ एक अनियंत्रित दीवार से घिरा औपचारिक उद्यान में स्थापित किया गया है।

मकबरे का निर्माण अनिवार्य रूप से 1643 में पूरा किया गया था लेकिन परियोजना के अन्य चरणों में काम 10 वर्षों तक जारी रहा। माना जाता है कि ताजमहल कॉम्प्लेक्स 1653 में लगभग 32 मिलियन रूपये होने के अनुमानित लागत पर पूरी तरह से पूरा हो चुका है, जो 2015 में लगभग 52.8 बिलियन रुपये (यूएस $ 827 मिलियन) होगा।

निर्माण परियोजना ने सम्राट, उस्ताद अहमद लाहौरी के लिए अदालत के वास्तुकार के नेतृत्व में आर्किटेक्ट्स के बोर्ड के मार्गदर्शन में लगभग 20,000 कारीगरों को रोजगार दिया।

ताजमहल को 1983 में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल के रूप में नामित किया गया था, "भारत में मुस्लिम कला का गहना और दुनिया की विरासत की सार्वभौमिक प्रशंसनीय कृतियों में से एक"।

इसे कई लोगों ने मुगल वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण और भारत के समृद्ध इतिहास का प्रतीक माना है। ताजमहल सालाना 7-8 मिलियन आगंतुकों को आकर्षित करता है।

ताजमहल कानिर्माण में कई प्रकार काउपयोग हुए गए सामग्री और यहाँ वह सामग्री कुछ मुख्य है:

1. **संगमरमर** (Marble): ताजमहल का प्रमुख भवन सफेद संगमरमर से निर्मित है। मकराना, राजस्थान और माध्य प्रदेश जैसे स्थानों से मार्बल आयात किया गया

2. **लाल संगमरमर** (Red Sandstone): कुछ स्थानों पर ताजमहल में लाल संगमरमर का उपयोग भी हुआ है। यह लाल पत्थर अंगूरी, भरतपुर, और दौलताबाद से आयात किया गया

3. **भूरा संगमरमर** (Brown Sandstone): कुछ आरके दरवाजों और संरचनाओं के लिए भूरे संगमरमर का उपयोग किया गया।

4. **संगमरमर का मकबरा** (Marble Inlay): ताजमहल के इन्टीरियर में रचनात्मक मकबरों के लिए मकराना का संगमरमर इस्तेमाल किया गया।

5. **मकई का मकबरा** (Cornelian Stones): ताजमहल के दरवाजों पर गुलाबी, नीला, और पीला रंग का मकई का मकबरा इस्तेमाल किया गया है।

6. **जड़ू काम** (Stucco Work): ताजमहल के संरचनात्मक विवरणों में स्टको काम का उपयोग किया गया है जिसमें आकारों को बनाने के लिए संगमरमर के धातु का उपयोग किया गया।

7. **दारी और स्तम्भ** (Domes and Pillars): ताजमहल की गुंबदें और स्तंभों के निर्माण में भी मकराना का संगमरमर उपयोग किया गया है।

इन सामग्रियों का समुचित उपयोग ताजमहल को उसकी शानदारता और सुंदरता के लिए एक अद्वितीय बनाता है।

स्तम्भ (Pillar) की विशषताएँ:

1. **आकार**: स्तम्भ सामान्यत: खड़े और ऊंचे होते हैं, जो संरचना को संबलित और स्थिर बनाते हैं।
2. **संरचना**: ये आमतौर पर पत्थर, धातु, या अन्य सांद्रता से बनाए जाते हैं और अक्सर आधारित या संरक्षित होते हैं।
3. **स्थायित्व**: स्तम्भों की मुख्य विशेषता यह होती है कि वे संरचना को ऊंचाई प्रदान करते हैं और उसकी स्थिरता बढ़ाते हैं।
4. **आकर्षण**: स्तम्भों की सुंदरता और गणनीय रचनात्मकता से वे विशेष आकर्षण प्राप्त करते हैं, विशेषतः जब उन्हें अद्वितीय डिज़ाइन और नक्काशी से सजाया जाता है।

ताज महल क प्रत्यक तत्व में गहरा महत्व है, जो इस विश्व क सबस प्रसिद्ध और पूजनीय स्मारकों में स एक बनाता है:

सफद संगमरमर की बनावट: सफेद संगमरमर की बनावट शुद्धता, अनन्तता, और महानता को प्रतिष्ठित करती है। इसकी निर्मल उपस्थिति मुग़ल सम्राट शाह जहाँ के पत्नी मुमताज़ महल के प्रति उनके प्रेम का प्रतीक है, जिनके लिए ताज महल बनाया गया था। चमकदार सफेद संगमरमर भी आध्यात्मिक शुद्धता और अतींद्रिय सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करता है, आगंतुकों में आदम्भुतता और श्रद्धा का भाव उत्पन्न करता है।

गुंबद: मध्य गुंबद ताजमहल की सबसे विशिष्ट विशेषता में से एक है। यह आकाश की प्रतीक्षा करता है और एक प्रतीक्षायुक्त आवाज़ बनाता है जहां मुमताज़ महल की आत्मा का वास होता है। गुंबद की शानदार वृत्ताकारी और जटिल विवरण इस मंदिर की उत्कृष्ट और आकाशमंडलीय उपस्थिति में योगदान करते हैं।

मीनारें: ताजमहल के चार मीनारें शक्ति, स्थिरता, और सममिति का प्रतीक हैं। वे भी एक व्यावहारिक उद्देश्य के रूप में काम करते हैं क्योंकि उन्हें भूकंप का सामना करने और मुख्य गुंबद को संरच्चनात्मक समर्थन प्रदान करने के लिए निर्मित किया गया था। इसके अलावा, मीनारें इस्लामी वास्तुकला के तत्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं और मंदिर की दृश्यमान समर्थता और संतुलन में योगदान करती हैं।

संगमरमर का मकबरा (Marble Inlay)

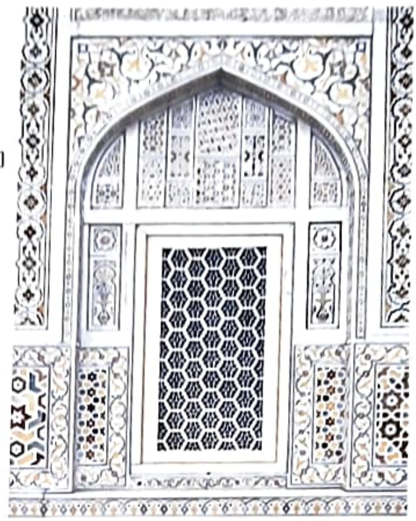

संगमरमर का मकबरा, या मार्बल इनला एक प्रकार की विशष्ठ कला तकनीक है जिसमें संगमरमर का पत्थरों को दूसरा पत्थरों में स्थानांतरित किया जाता है ताकि वा चमकीला और सजीव चित्र या डिज़ाइन बनान के लिए उपयोग किए जा सकें। संगमरमर का मकबरा ताजमहल और □न्य मुग़ल आवासों में □द्वितीय और उत्कृष्ट सजावट का स्रोत है। इसकी कुछ मुख्य विशष्ठताएँ निम्नलिखित हैं:पत्थरों का उच्च गुणवत्ता: संगमरमर का मकबरा उच्च गुणवत्ता वाल संगमरमर पत्थरों का उपयोग करता है जो संरचनात्मक और चमकील डिज़ाइन को बनाए रखत हैं।कला का प्रयोग: संगमरमर क मकबर में कला का व्यापक प्रयोग किया जाता है, जैस कि चित्र, रंग, और पैटर्न्स, ज़ो उस एक आकर्षक और □नूठा रूप दत हैं।सजावटी रचनात्मकता: संगमरमर का मकबरा भवनों, प्रतिमाओं, और संरचनाओं की सजावटी रचनात्मकता को बढ़ाता है और उन्हें एक विशष्ठ और आकर्षक बनाता है।धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व: संगमरमर का मकबरा धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को उजागर करता है और भवनों को उनक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है।दुर्दर्शता: संगमरमर का मकबरा लंब समय तक □पूर्णता और दूरदर्शिता स मुक्त रहता है, जो उस एक दुर्लभ और मूल्यवान बनाता है।इन सभी विशष्ठताओं क कारण, संगमर

ताजमहल का डिज़ाइन □ त्यंत शानदार और □ द्वितीय है, जो उसको विश्वस्तरीय एक □ द्वितीय स्मारक बनाता है। यहाँ इसकाडिज़ाइन की कुछ मुख्य विशषताएँ हैं:

1. **मकराना मार्बल का प्रयोग:** ताजमहल का मुख्य भवन सफेद मकराना मार्बल से निर्मित है, जो उसको एक उत्कृष्ट और शानदार रूप देता है। मकराना मार्बल की खासियत इसकी श्वेतता और चमक है जो इसे विशेष बनाती है।

2. **मीनारों की आकृति:** ताजमहल के दोनों पक्षों पर गुंबदों या मीनारों की आकृति है, जो उसकी शैली को और भी आकर्षक बनाती है। ये मीनार ताजमहल के वातावरण में शान और गरिमा लाते हैं।

3. **गणपति और □ न्य आकृतियाँ:** ताजमहल के भवन में विभिन्न आकृतियों का उपयोग किया गया है जैसे कि गणपति, फूल, पत्तियाँ आदि जो उसे और भी सुंदर बनाती हैं।

4. **वृत्ताकार घर्षण और ऊर्ध्वाधर्य:** ताजमहल की वृत्ताकार घर्षण और ऊर्ध्वाधर्य उसे आकर्षक और सुंदर बनाती हैं। इसके बारीकी से किए गए घर्षण और ऊर्ध्वाधर्य उसकी कला को प्रशंसनीय बनाते हैं।

5. **बाग़बानी:** ताजमहल के आस-पास विशाल बाग़बानी का व्यापक निर्माण है, जो उसे आदर्श और सुंदरता से भर देता है। ये बाग़बानी ताजमहल के प्रेम और समर्पण के भाव को अभिव्यक्त करती हैं।

ताजमहल का डिज़ाइन उसकी उत्कृष्टता और सुंदरता का प्रमुख कारण है, जो उसे विश्वस्तरीय और समर्पित बनाता है।

भारत और □ंतरराष्ट्रीय स्तर पर साहित्य, कला और लोकप्रिय संस्कृति पर इसका प्रभाव पड़ा।

ताज महल का साहित्य, कला, और लोकप्रिय संस्कृति पर प्रभाव भारत और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित है:

साहित्य में प्रभाव: ताज महल की अनूठी और रोमांचक कहानी ने लेखकों को प्रेरित किया है और उनकी कलम को गुदगुदाया है। कई कवियों, उपन्यासकारों, और कहानीकारों ने ताज महल को अपनी कहानियों, कविताओं, और उपन्यासों में समाहित किया है, जिससे इसे साहित्य का एक महत्वपूर्ण तत्व बनाया गया है।

कला में प्रभाव: ताज महल की सुंदरता और ग्रेस ने कलाकारों को आकर्षित किया है और उन्हें अपने कार्य में प्रेरित किया है। विभिन्न कला फॉर्मों में, जैसे पेंटिंग, स्कल्प्चर, और फोटोग्राफी, में ताज महल के प्रति लोगों की दृष्टि दिखाई गई है।

लोकप्रिय संस्कृति में प्रभाव: ताज महल की छवि और प्रसिद्धता ने उसे एक प्रमुख प्रेरणा स्रोत बना दिया है और उसे लोकप्रिय संस्कृति में अधिक सामान्य बना दिया है। वाणी, फिल्में, टेलीविजन, और अन्य माध्यमों में ताज महल का उल्लेख व्यापक रूप से देखा जा सकता है, जो उसकी सांस्कृतिक महत्वता और प्रभाव को दर्शाता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव: ताज महल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक प्रमुख संग्रहीत केंद्र है, जो अनेक देशों के पर्यटकों को आकर्षित करता है और उनके भारतीय क़ला और संस्कृति के प्रति उत्साह को बढ़ाता है। ताज महल के प्रभाव का अनुभव भारत के विदेशी यात्री द्वारा की जाने वाली साझेदार अनुभवों में भी देखा जा सकता है।इस रूप में, ताज महल का साहित्य, कला, और लोकप्रिय संस्कृति पर भारत और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव है, जो इसे एक सांस्कृतिक और कला का संग्रहालय बनाता है।

यी विरासत में निहित है।

ताज महल के निर्माण के पूर्ण होने के बाद, ताज महल के निर्माण में शामिल लोगों का भविष्य से संबंधित विवरण संग्रहीत नहीं है, लेकिन कुछ सुझाव हैं:

मुग़ल साम्राज्य की सेवा: कुछ शिल्पकार, कारीगरों, और कामगारों को ताज महल के निर्माण के बाद भी मुग़ल साम्राज्य की सेवा में रखा गया हो सकता है। वे अन्य आर्किटेक्टुरल प्रोजेक्ट्स में भी शामिल हो सकते थे जो मुग़ल शासनकाल में शुरू हुए थे।

स्थानीय समुदाय में वापसी: कुछ कामगार और शिल्पकार शायद ताज महल के निर्माण के बाद अपने स्थानीय समुदायों में वापसी कर सकते हैं, और अपने शिल्पकला को स्थानीय रूप से प्रचारित कर सकते हैं।

राजस्थानी मार्बल उद्योग में काम: ताज महल के निर्माण में मार्बल के कारीगरों और शिल्पकारों का महत्वपूर्ण योगदान था, और वे शायद इस क्षेत्र में अपने कौशल का उपयोग जारी रख सकते थे।

मुग़ल कला और सांस्कृतिक प्रोडक्शन में भागीदारी: कुछ कारीगर और शिल्पकार नेतृत्व, अद्यतन, और बचाव के क्षेत्र में अपने ज्ञान का उपयोग कर सकते थे, जिससे मुग़ल कला और सांस्कृतिक प्रोडक्शन को बचाया और प्रोत्साहित किया जा सकता है।

नगरपलिका और उद्योगिक विकास: कुछ लोग शहरी क्षेत्रों में व्यापारिक और उद्योगिक विकास के साथ जुड़ सकते थे, जैसे कि नगरपलिका कार्य, अद्यतन, और सेवाएं।

इन सुझावों के अलावा, ताज महल के निर्माण के बाद शिल्पकारों, कारीगरों, और कामगारों के जीवन के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

ताज महल का प्रेम और महत्व

ताजमहल अनन्त प्रेम और समर्पण का प्रतीक के रूप में खड़ा है, जो सम्राट शाह जहाँ और उनकी प्रियतमा मुमताज़ महल के बीच स्थायी बंधन की एक गहरी साक्षात्कार है। इसे प्रेम के स्मारक के रूप में प्रतीति के रूप में उन्हीं पहलुओं में गहरे जड़ें हैं:

वास्तुशिल्पीय अद्वितीयता: ताजमहल की आश्चर्यजनक वास्तुकला, उसकी सममिति, उत्कृष्ट नक्काशियाँ और जटिल विवरण, शाह जहाँ के मुमताज़ महल के प्रति प्रेम की गहराई को दर्शाती है। मंदिर की केवल सुंदरता और महानता निरंतर प्रेम और समर्पण का एक भाव उत्पन्न करती है।

निर्माण का उद्देश्य: शाह जहाँ ने मुमताज़ महल के लिए एक समाधि की निर्माण की मुमताज़ महल के समाधि के रूप में ताजमहल का निर्माण कराया। सम्राट का इस प्रकार का एक भव्य स्मारक उसके प्रति अटूट प्रेम और समर्पण का प्रतीक है, जो समय की सीमाओं को तार्किक करता है।

सफेद संगमरमर का प्रतीकता: सफेद संगमरमर का इस्तेमाल ताजमहल के निर्माण में शुद्धता, अनंतता, और अद्वितीयता का प्रतीक है। यह शाह जहाँ और मुमताज़ महल के प्रेम की पवित्रता और ईमानदारी का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे काल की सीमाओं से पार करने का माना जाता है।

स्वर्गीय निवास: ताजमहल को अक्सर स्वर्ग की एक पृथ्वीय प्रतिरूप के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसमें उसका मध्य गुंबद मुमताज़ महल की आत्मा का निवास होने का प्रतीक माना जाता है। यह प्रतीक्षायुक्त प्रेम और आत्मीय संयोग की आत्मा को पुनर्निर्मित करता है।

स्थायी विरासत: सदियों के बावजूद, ताजमहल अनंत प्रेम और समर्पण के प्रतीक के रूप में मानव मन और ध्यान को आकर्षित करता है। इसका स्थायी विरासत मानवीय मृत्यु की सीमाओं को पार करने की प्रेम की शक्ति की याद दिलाता है और दुनिया पर एक अद्वितीय प्रभाव छोड़ता है।

और आकर्षक बनाते हैं।इस प्रकार. जड़ू काम एक महत्वपूर्ण और विशेष तकनीक है जो संरचनाओं को सजाने के लिए प्रयोग की जाती है और उन्हें आकर्षक बनाती है।

दारी और स्तम्भ (Domes and Pillars)

दारी (Dome) और स्तम्भ (Pillar) दोनों ही विभिन्न शैलियों, आकारों, और विशेषताओं के साथ आते हैं। ये उनकी विशेषताओं कुछ मुख्य हैं:

दारी (Dome) की विशषताएँ:

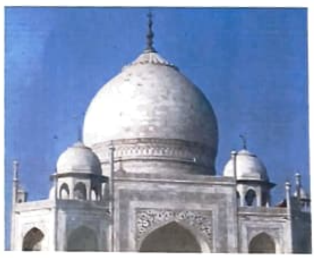

1. **आकार**: दारियाँ आमतौर पर गोलाकार होती हैं, जो किसी भी संरचना को ऊपर से ढकती हैं।

2. **संरचना**: वे धातु, पत्थर, या अन्य सांद्रता से बनी होती हैं और अक्सर कठोर स्तम्भों या आधारों पर आधारित होती हैं।

3. **स्थायित्व**: एक दारी की मुख्य विशेषता यह होती है कि वे बहुत विशाल होती हैं और संरचना को अधिक स्थायी और स्थिर बनाती हैं।

4. **आकर्षण**: दारियों की शानदारता और विशेषता से उन्हें विशेष आकर्षण प्राप्त होता है, विशेषतः उनके सर्वोत्तम रूप में विकासित किए गए होते हैं।

2007 में, इसे विश्व के नए 7 आश्चर्य (2000-2007) पहल का विजेता घोषित किया गया था।

23 मार्च 2024

23 मार्च 2024 चौथा दिन सूभे 4 भजे ऊतकर हम मथुरा ,वृन्दावन आधी ताज महल ढेकने केलिए चले गए ।

मथुरा

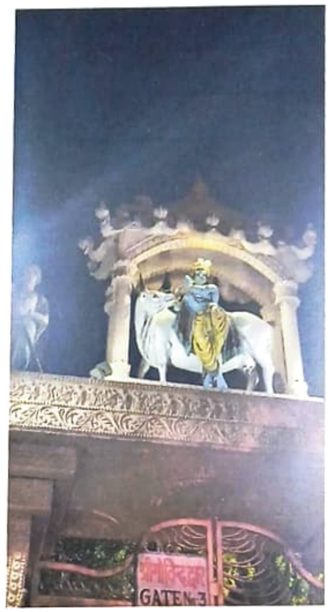

मथुरा भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के मथुरा ज़िले में स्थित एक नगर है। मथुरा ऐतिहासिक रूप से कुषाण राजवंश द्वारा राजधानी के रूप में विकसित नगर है। लोगों की मान्यता है की उससे पूर्व भगवान कृष्ण के समय काल से भी पूर्व अर्थात लगभग 7500 वर्ष से यह नगर अस्तित्व में है.यह धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। लेकिन इसका कोई पुरातात्विक प्रमाण नहीं है क्योंकि 13 वीं शताब्दी से पहले इसका कहीं भी जिक्र नही है उदाहरण के लिए सन् 402 मे चीनी यात्री फाहियान भारत आया उसने अपनी किताब मे लिखा है "फाहियान मथुरा (मताऊला) पहुंचे, जहां पर उन्होंने कई बिहारों को देखा, जिनमें तीन हजार से ज्यादा भिक्खू रहते थे और यहां के सभी राजा बुद्ध के अनुयाई थे । वह पे एक मार्बल के दीवार पर किरष्णा जी की जन्म कथा धिकाई गयी है जेसे की कोई भरम होता है जिसम्हे उनकी राधा के सैट रसरलीय गोपियो के साथ ये सिर्फ किसी शुद्ध आत्मा को ही दिक सकते है । मंदिर के अंदर भी किरष्णा जी के जीवन के बारे महे अकराइत्य थी । अंडर फोनेस ले जाना मनाई थी और दरशीन सिर्फ 2 यह 3 मीनूटिएस केलिए दिया जाता है ।

वृन्दावन

वृन्दावन, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के मथुरा ज़िले में स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक व ऐतिहासिक नगर है। वृन्दावन भगवान श्रीकृष्ण की लीला से जुडा हुआ है।

यह स्थान श्री कृष्ण की कुछ अलौकिक बाल लीलाओं का केन्द्र माना जाता है। यहाँ विशाल संख्या में श्री कृष्ण और राधा रानी के मन्दिर हैं ।

बांके विहारी जी का मंदिर, श्री गरुड़ गोविंद जी का मंदिर व राधावल्लभ लाल जी का, ठा.श्री पर्यावरण बिहारी जी का मंदिर बड़े प्राचीन हैं । इसके अतिरिक्त यहाँ श्री राधारमण, श्री राधा दामोदर, राधा श्याम सुंदर, गोपीनाथ, गोकुलेश, श्री कृष्ण बलराम

मन्दिर, पागलबाबा का मंदिर, रंगनाथ जी का मंदिर, प्रेम मंदिर, श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, अक्षय पात्र, वैष्णो देवी मंदिर। निधि वन ,श्री रामबाग मन्दिर आदि भी दर्शनीय स्थान है। यहा पे अहमे पंडित जी ने प्रवच दिया और बताया की हमरे जीवन महे माँ और पिता का क्या महत्व होता है । इसी मंदिर महे हमने होली भी खेली यह पे होइली एक महीने तक खेली जाती है यह पे एक भीच महे पैड भी है जहा पे हमने धक्षिणा भी दी । भर निकलते सेम हमे एक चोट सा बाज़ार दिएका जहा फे छोटे चोट हाती की मूर्ति कृष्ण जी की मूर्तिया और भी भोत कुछ था । यहा पे छोड़े बचो से लेके बुड़े आदमी तक कुछ नह कुछ ठो भएछ रहे थे ।

यह कृष्ण की लीलास्थली है। हरिवंशपुराण, श्रीमद्भागवत, विष्णु पुराण आदि में वृन्दावन की महिमा का वर्णन किया गया है। कालिदास ने इसका उल्लेख रघुवंश में इंदुमती-स्वयंवर के प्रसंग में शूरसेनाधिपति सुषेण का परिचय देते हुए किया है इससे कालिदास के समय में

वृन्दावन के मनोहारी उद्यानों के अस्तित्व का भान होता है। श्रीमद्भागवत के अनुसार गोकुल से कंस के अत्याचार से बचने के लिए नंदजी कुटुंबियों और सजातीयों के

साथ वृन्दावन में निवास के लिए आये थे। विष्णु पुराण में इसी प्रसंग का उल्लेख है। विष्णुपुराण में भी वृन्दाव

में कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है।

वर्तमान में टटिया स्थान, निधिवन, सेवाकुंज, मदनटेर, बिहारी जी की बगीची, रामबाग, लता भवन (प्राचीन नाम टेहरी वाला बगीचा) आरक्षित वनी के रूप में दर्शनीय हैं। निधि वन श्री बांके बिहारी जी मन्दिर से करीब में ही है। यहां की मान्यता है कि यहीं भगवान कृष्ण गोपियों संग रास रचाते थे।लोक किंवदंती है कि आज भी रात में रास रचाते हैं।

मेरा अनुभव:-

चोहटे दिन हम सुभे के 4 भजे उत्के वृन्दाहवन केलिए निकल गये वाहा पर जब हम पहोचए थो होली खेली जा रही थी हम सबलोग कृष्णा जी के धरसन केलिए रूखे हुवे थे उसम्हे से कुछ गिने चुने बच्चों को हि धरसन मिले जिसमे से महे भी एक सौभाग्य शाली थी मुझे कृष्णा जी को ढेक कर मन मेरा बहोत ट्रप हो गया वहा से वापस आते समाये हमने एक धभे पे कहना खाय जो अच्छा नहीं था मुझे उलटी और सिरदार होने लगे मेुज मेरे दोस्तों ने बहोत अची तरा से समल लिया बड़ महे हम ताज महल को ढेकेने चले गये वहा पे पहोच कर बहोत अच्छा लगा लेकिन उदार भ्होत भीड़ थी नाह ठीक से कुछ ढेकने मिला जैसे हि थोड़ी भीड़ कम थो कुछ ढेकेने मिला वहा की कला करी बहोत लुबह हित थी लेकिन कुछ भी हो थोड़ा दर थो लगरहा थात किुकी ये ताज महल थो खबर पे बनया हुवा था । लेकिन वो सुंदर और आकर्षित था ।

उग्रसेन की बावली

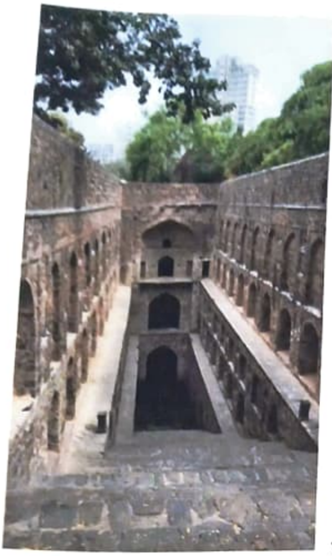

यह सोपानयुक्त कुआँ अथवा दाबली. एक भूमिगन्य इसाच्त है जिसका निर्माण मुख्यतः मौवान दो परिवर्तन कारण जल की आपूर्ति में खाई अनियमितता को नियंत्रण करनी हेतु जल के संग्रह के लिये किया गया था। इस प्रावाली का निर्माण तदात्त अमुवारा के मूर्धप्स राज्जा सग्रसेन द्वारा किया गया। इस इमारत की सुष्य विशेषता उत्तर में स्थित गहरे कुएँ की ओर लम्बी कतारबद्ध सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों के दोनों ओर लोडी दीवार मेहराबकुन्त गलियारों की श्रृंखल है। बह साबधी लतर से दक्षिण दिशा में 50 सीटर लम्ची लथा भूतल पर 15 मीटर चौड़ी है। अनगढ़ अन्धा गढ़े हुए मस्थर से निर्मित यह विल्ली में हमारी वाइलियों में से एक है। इसकी स्थापत्य शैली राचरकालीन दुगलक तथा लोधी काल (15 भी - 15 वी सदी ईसी) से मेल खाती है।

पश्चिम की और तीन प्रवेशद्वार युक्त एक मस्जिद है। यह एक बोस ऊँचे चबूतरे पर किनारों और भूमिगत दालानों से मुक्त है। इसकी स्यापत्ता में रहे मुहाली की पीद के समान हित, 'चेला आले की चकाकीय़का चार खम्भों का संयुक्तरम्. बावस्कन्ध में प्रयुस्त पदक अलंकरण इसको निशि प्रदान कथा है।

24 मार्च 2024

24 मार्च 2024 हम सब चाय नाश्ता करनेके बाद राज घाट, गांधी म्यूज़ियम , जामिया मशजीद , बल भवन ,लाल किला और सरोजिनी नगर के और निकाल पड़े ।

राज घाट

राजघाट : गांधी समाधि

राजघाट यमुना नदी के तट पर स्थित पुरानी दिल्ली (शाहजहानाबाद) के एक घाट का नाम है। इसी स्थान पर महात्मा गांधी का उनकी शहादत के बाद दिनांक 31 जनवरी, 1948 को दाह-संस्कार किया गया था। राष्ट्रपिता को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए यहां एक स्मारक का निर्माण किया गया। मुख्य द्वार से पत्थर निर्मित फुटपाथ स्मारक तक जाता है। यह स्मारक खुले आसमान के नीचे काले संगमरमर का एक मंच स्थल है। एक ओर मध्य में एक अखंड ज्योति निरंतर जलती रहती है तथा दूसरी ओर गांधी जी के अंतिम शब्द 'हे राम' लिखे गये हैं। यह स्मारक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन की सादगी को दर्शाता है। समाधि परिसर में प्रत्येक शुक्रवार कताई कार्यक्रम और सर्व-धर्म-प्रार्थना का आयोजन किया जाता है।

यहां ईंटों से बना एक चबूतरा है, जहां उनके मृत शरीर को जलाया गया था और यह काले संगमरमर का मंच, संगमरमर के किनारों से घिरा है।

गांधीजी के मुख से निकले उनके आखिरी शब्द 'हे राम' उस स्मारक पर अंकित है।

पास ही में एक शाश्वत ज्योति जलती रहती है।

इस महान नेता को श्रद्धांजलि देने से पहले आगंतुकों को अपने जूते निकालने पड़ते हैं। शुक्रवार, जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी, उसे याद करने के लिए प्रत्येक शुक्रवार को यहां एक समारोह आयोजित किया जाता है। पास ही में दो संग्रहालय हैं, जो गांधीजी को समर्पित हैं।

इस स्मारक को 'वाणु जी भूता' द्वारा डिजाइन किया गया था, और इस राष्ट्रीय स्मारक के वास्तुशिल्प डिजाइन के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, राजीव गांधी और संजय गांधी जैसे कई अन्य नेताओं के स्मारक भी राज घाट परिसर के अंदर हैं।

हमता सिद्धाने के लाडी हुए है कि सत्प आर अहिंसा केवल व्यक्तिगत आचार के नियम नहीं है। अनुताप, जाति और राष्ट्र की नीति को रूप ले सकते है। मेरा मह विश्वास है

कि अहिंसा सदैव के लिए है। मोक गांधी

अॐ जन्म ए सिद्ध करने ने आ में सच्च कने अहिसा है नियम एडे दक्कली इक्कली एलान जोग नेई ने सब दे, कुत लौकाई ते पुल्खे दे नीति-धर्म बनने लोगष्ण। अहिंसा ने मुगे जुगे लेई जै, प मेरा पक्क जकीन जे।

डोगरी

राजघाट यमुना नदी के तट पर स्थित पुरानी दिल्ली (शाहजहानाबाद) के एक घाट का नाम है।

गांधी म्यूज़ियम

महात्मा गांधी जिन्हें मोहनदास करमचंद गांधी, बापू या राष्ट्रपिता के नाम से भी पुकारा जाता है, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता थे। उन्होंने देश की जनता को हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा के आधार पर स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने असहयोग आंदोलन से लेकर नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे कई आंदोलन के जरिए भारत को स्वतंत्रता दिलवाने में अहम् भूमिका निभाई।

आज पूरे देश में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम बेहद सम्मान के साथ लिया जाता है।

साथ ही आने वाली पीढ़ी को उनके विचारों से अवगत करवाने और उनके सादे जीवन की झलक दिखाने के लिए देश के कई राज्यों में गांधी म्यूज़ियम बनाए गए हैं।

बता दें कि बापू ने हमेशा परम्परागत भारतीय पोशाक धोती व सूत से बनी शाल पहनी जिसे वे स्वयं चरखे पर सूत कातकर हाथ से बनाते थे।

आज हम आपको इन्हीं गांधी म्यूज़ियम में से कुछ के बारे में बता रहे हैं, जहां पर आपको एक बार जरूर जाना चाहिए

1948 में गांधी की हत्या के तुरंत बाद मुंबई में सबसे पहले यह संग्रहालय खोला गया। 1961 में राज घाट, नई दिल्ली जाने से पहले संग्रहालय कई बार स्थानांतरित हुआ। दरअसल, 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई थी।

उनकी मृत्यु के कुछ समय बाद, कलेक्टरों ने गांधी के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी जुटाना शुरू किया। मूल रूप से गांधी से जुड़ी व्यक्तिगत वस्तुओं, समाचार पत्रों और पुस्तकों को मुंबई ले जाया गया। इसके बाद 1951 में, आइटमों को नई दिल्ली में कोटा हाउस के पास इमारतों में ले जाया गया।

बाद में 1959 में, महात्मा गांधी की समाधि के बगल में गांधी संग्रहालय, राजघाट, नई दिल्ली में स्थानांतरित हुआ।

महात्मा गांधी की हत्या की 13 वीं वर्षगांठ पर 1961 में आधिकारिक तौर पर संग्रहालय खोला गया, जब भारत के राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने इसे औपचारिक रूप से खोला।

गांधी मेमोरियल म्यूज़ियम 1959 में स्थापित, गांधी के लिए एक स्मारक संग्रहालय है जो भारत के तमिलनाडु के मदुरै शहर में स्थित है।

यह अब देश के पांच प्रमुख गांधी संग्रहालय में से एक है। इसमें गांधी द्वारा पहने गए खून से सने कपड़ों का भी एक हिस्सा शामिल है जब उनकी हत्या नाथूराम गोडसे ने की थी।

इस संग्रहालय में एक मूल पत्र है जो व्यक्तिगत रूप से गांधीजी द्वारा देवकोटाई के नारायणन सत्संगी को लिखा गया है।

गांधीजी द्वारा स्वतंत्रता सेनानी और कवि सुब्रमण्यम भारती को भेजे गए बधाई संदेश को भी इस संग्रहालय मे संरक्षित किया गया है। एक और दिलचस्प पत्र महात्मा गाँधी द्वारा एडोल्फ हिटलर को "प्रिय मित्र" के रूप में संबोधित करते हुए लिखा गया है।

मणि भवन एक साधारण पुराने स्टाइल से बनी दो मंजिला इमारत है। जो मुंबई के लबर्नम रोड पर स्थित है। जब भी गांधीजी 1917 से 1934 के बीच मुंबई में थे, वे यहीं रहे। अब इसे एक संग्रहालय और अनुसंधान केंद्र में बदल दिया गया है। यह श्री रेवाशंकर जगजीवन झावेरी का था, जो गांधी के मित्र थे और उस अवधि के दौरान उनकी मेजबानी करते थे। यह मणि भवन ही था, जहां से गांधी ने रौलट एक्ट के खिलाफ सत्याग्रह शुरू किया और स्वदेशी, खादी और हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रचार किया। 1955 में यह भवन गांधीजी के स्मारक के रूप में समर्पित किया गया था।

इस म्यूजियम की स्थापना 1963 में की गई। अगर आप बापू के जीवन को करीब से देखना चाहती हैं तो आपको इस म्यूजियम में जरूर जाना चाहिए। यहां पर गांधी जी के मूल व फोटोस्टेट दोनों रूपों में 34,065 पत्र मौजूद हैं।

इसके अलावा, पुस्तकालय में गांधीजी के जीवन, काम और शिक्षण से संबंधित अंग्रेजी, हिंदी और गुजराती में 50 से अधिक पत्रिकाओं के साथ पढ़ने के कमरे के साथ लगभग 21,500 किताबें हैं।

अगर आपको यह लेख अच्छा लगा हो तो इसे शेयर जरूर करें व इसी तरह के अन्य लेख पढ़ने के लिए जुड़ी रहें आपकी अपनी वेबसाइट हरजिन्दगी के साथ।

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

जामिया मशजीद

यह मस्जिद लाल पत्थरों और संगमरमर का बना हुआ है। लाल किले से महज 500 मी. की दूरी पर जामा मस्जिद स्थित है जो भारत की सबसे बड़ी मस्जिद है। इस मस्जिद का निर्माण 1650 में शाहजहां ने शुरु करवाया था। इसे बनने में 6 वर्ष का समय और 10 लाख रु.लगे थे। बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से निर्मित इस मस्जिद में उत्तर और दक्षिण द्वारों से प्रवेश किया जा सकता है।

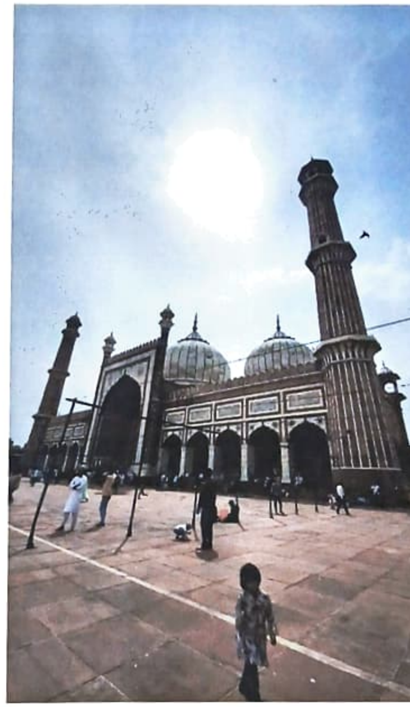

पूर्वी द्वार केवल शुक्रवार को ही खुलता है। इसके बारे में कहा जाता है कि सुल्तान इसी द्वार का प्रयोग करते थे। इसका प्रार्थना गृह बहुत ही सुंदर है। इसमें ग्यारह मेहराब हैं जिसमें बीच वाला महराब अन्य से कुछ बड़ा है।

इसके ऊपर बने गुंबदों को सफेद और काले संगमरमर से सजाया गया है जो निजामुद्दीन दरगाह की याद दिलाते हैं।जामा मस्जिद दिल्ली में सम्राट शाहजहाँ द्वारा निर्मित एक मस्जिद है। यह भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है, जिसमें एक बार में 25,000 लोग बैठ सकते हैं।

यह मध्य दिल्ली के बीच में स्थित है। जामा मस्जिद दिल्ली में स्थित एक खास जगह है; वास्तव में, आप मस्जिद को चकित हो जाएंगे।

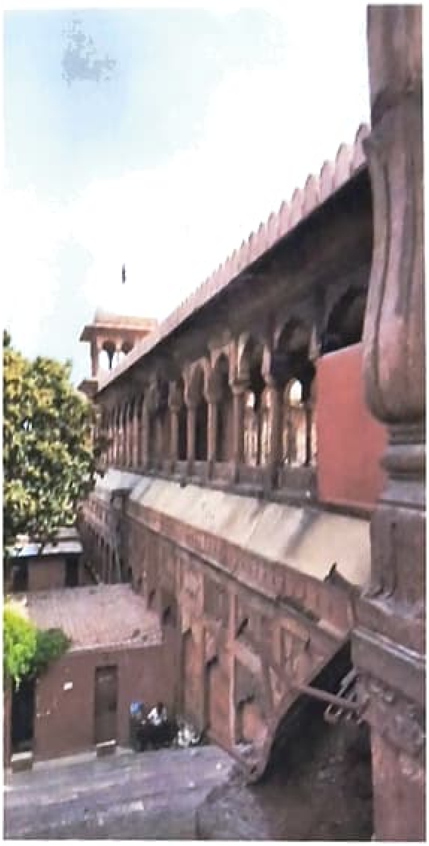

चांदनी चौक में स्थित है जिसकी वजह से यह एक रेजिडेंशियल और कमर्शियल प्रॉपर्टीज़ का विकल्प है। चांदनी चौक कमर्शियल प्रॉपर्टी के लिए रियल एस्टेट हॉटस्पॉट है। यहां कई ऐसे घर हैं जिनकी कीमत 2 करोड़ रुपये से अधिक है। कमर्शियल स्पेस की मांग अधिक है क्योंकि यह दिल्ली के व्यापारियों का मुख्य केंद्र है। कमर्शियल ऑफिस स्पेस की कीमत औसतन 92,581 रुपये प्रति वर्ग फुट है। हालांकि पहले, आइए जामा मस्जिद दिल्ली के बारे में जानते हैं, जो यहां का एक प्रमुख स्थल है।

बाल भवन

जवाहर लाल नेहरु द्वारा 1956 नें इसकी स्थापना 5-16 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए की गई थी | यह [[मानव संसाधन विकास मंत्रालय]] द्वारा पूर्णतः वित्तपोषित है।

[राष्ट्रीय बालभवन] का लक्ष्य है कि वर्तमान में स्कूल आयु वर्ग के 30 करोड़ बच्चों के दृष्टिगत 2020 तक वैश्विक ज्ञान के अग्रेता के रूप में भारत का भविष्य तभी संरक्षित है, जब हम प्रत्येक बच्चे में सृजनात्मक एवं क्षमता का सम्पोषण कर सकें ।

राष्ट्रीय बाल भवन के संस्थापक श्री जवाहर लाल नेहरू ने महसूस किया था कि इस लक्ष्य को सुनिश्चित करने के लिए बाल भवन बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में औपचारिक शिक्षा प्रणाली में काफी कम संभावना है।

उन्होंने इस कमी की संपूर्ति में राष्ट्रीय बाल भवन को एक पर्याय के रूप में बच्चों की जिज्ञासा और कल्पना को संपोषित किया, उन्हें बाल्यकाल का आनन्द एवं उत्साहपूर्ण अध्ययन में मदद की है ।

बालभवन संस्थानिक आन्दोलन है. जो आज बच्चों को भावी सृजनशील चिन्तक, डिजाईनर, वैज्ञानिक, नेता, राष्ट्रभक्त एवं जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में सतत प्रयत्नशील हैं, जो समाज में अपना योगदान दे सकें ।

इंदिरा गांधी को राष्ट्रीय बाल भवन की पहली अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था। वर्तमान में, पूरे भारत में 73 बाल भवन हैं , जो राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली से संबद्ध हैं ।

लाल किला

भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित लाल किला देश की आन-बान शान और देश की आजादी का प्रतीक है। मुगल काल में बना यह ऐतिहासक स्मारक विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल है और भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।

लाल किला के सौंदर्य, भव्यता और आर्कषण को देखने दुनिया के कोने-कोने से लोग आते हैं और इसकी शाही बनावट और अनूठी वास्तुकला की प्रशंसा करते हैं।

यह शाही किला मुगल बादशाहों का न सिर्फ राजनीतिक केन्द्र है बल्कि यह औपचारिक केन्द्र भी हुआ करता था, जिस पर करीब 200 सालों तक मुगल वंश के शासकों का राज रहा। देश की जंग-ए-आजादी का गवाह रहा लाल किला मुगलकालीन वास्तुकला, सृजनात्मकता और सौंदर्य का अनुपम और अनूठा उदाहरण है।

1648 ईसवी में बने इस भव्य किले के अंदर एक बेहद सुंदर संग्रहालय भी बना हुआ है।

करीब 250 एकड़ जमीन में फैला यह भव्य किला मुगल राजशाही और ब्रिटिशर्स के खिलाफ गहरे संघर्ष की दास्तान बयां करता हैं।

वहीं भारत का राष्ट्रीय गौरव माने जाना वाला इस किले का इतिहास बेहद दिलचस्प है।

लाल किला दिल्ली शहर का सर्वाधिक प्रख्यात पर्यटन स्थल है, यह लाखॉ पर्यटकों को प्रतिवर्ष आकर्षित करता है। यह किला वह स्थल भी है, जहाँ से भारत के प्रधान मंत्री स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को देश की जनता को सम्बोधित करते हैं। यह दिल्ली का सबसे बड़ा स्मारक भी है।

एक समय था, जब 3000 लोग इस इमारत समूह में रहा करते थे। परंतु 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद, किले पर ब्रिटिश सेना का कब्ज़ा हो गया, एवं कई रिहायशी महल नष्ट कर दिये गये। इसे ब्रिटिश सेना का मुख्यालय भी बनाया गया।

इसी संग्राम के एकदम बाद बहादुर शाह जफर पर यहीं मुकदमा भी चला था। यहीं पर नवंबर 1945 में इण्डियन नेशनल आर्मी के तीन अफसरों का कोर्ट मार्शल किया गया था।

यह स्वतंत्रता के बाद 1947 में हुआ था। इसके बाद भारतीय सेना ने इस किले का नियंत्रण ले लिया था। बाद में दिसम्बर 2003 में, भारतीय सेना ने इसे भारतीय पर्यटन प्राधिकारियों को सौंप दिया।

इस किले पर दिसम्बर 2000 में लश्कर-ए-तोएबा के आतंकवादियों द्वारा हमला भी हुआ था। इसमें दो सैनिक एवं एक नागरिक मृत्यु को प्राप्त हुए।

इसे मीडिया द्वारा काश्मीर में भारत - पाकिस्तान शांति प्रक्रिया को बाधित करने का प्रयास बताया गया था।

सरोजिनी नगर

ये दिल्ली के दक्षिण महे स्थित है ये अपने वस्तु के कम भाव के वजसे माशूर है । यहा पे लोको भौत भीड़ होती है। यहा पे आपको हर तारे की चीज मिल जाएगी एल्क्ट्रोनिक से लेके कपड़े और बाकी के अनय वस्तु तू भी मिलती है।

बाजार में हम शिपिंग करने गए। वहा बहुत सस्ती दाम में हमने ख़रीदारी की है। कपड़े, कान के झुमके, जूट, बैग, आधी सामान ख़रीदे। वह पे चीज सस्ती है लेकिन टिकाऊ नहीं जेसे वह के कपड़े पतले है और जल्दी ही फट जाए ऐसा मटिरियल का कपड़ा है।

मेरा अनुभव:-

पचवे दिन हम राज घाट पे चले गये ये गंडीजी समधी थी उदार से हम गांधी संग्रहलाई महे गये उधर गांधीजी के के जीवन के बारे महे सरी माहिती थी और हर वो एक चीज़ जो उन्होंने ब्रिटिशो के खिलाफ अंधलान महे हुई थी वो सब रखा था वो सब ढेक कर मुझे देश भक्ति की और भी प्रेणा हुई उदार हमे उनके जिंदगगी से भी बहोत प्रेणा मिली जैसे की बिना अहिंसा के भे लड़ाई जीती जा सकती है

और अपिनि जिंदगी किस थारा जीना है वो भी पटा चला वाहा से हम् जमा मस्जिद की और गये वाह पे हमे सही से मुस्लिम संकिरीट का पटा चला वाहा से हम बाल् भावन की और गये वहा पे हमे तरा तरा के पक्षी और जानवर ढेके मिले ये बल भावन सिर्फ 6 से 16 सल के बहचो के लिए बाया गया था। हम फिर लाल किले की और चले गये ये बड़ी प्रतिमा ढेके म्हे थोड़ी चोहक गयी लाल किले को ये नम उसके पथरो की वजसे पड़ा था

उसके बड़ हम सरोजिनी नगर गये जहा पे हमे बोहोत सी चीज़े सस्ते महे महिली ज्यादा

कुछ खास थो

नहीं था लेकीन् वहा पे घूमने मेहे मजा आया।

निष्कर्ष

यहाँ टूर का मार्गदर्शन करते हुए मैं बताना चाहती हूँ की हमारा सफर काफी यादगार और रोमांचक रहा.हमने इस टूर के दौरान खुप मज़े किये नयी नयी जगह देखे जिनको हमने बस टीवी पर फिल्मों मैं देखा था यहाँ सब अद्भुत थावह की बोली सुनी जो कि शुद्ध हिंदी खड़ी बोली थी. वह का वातावरण दूषित था पर वह के लोगो के देखने से ऐसा लग रहा था जैसे उनको आदत हो गयी है उनकोबधबू से कोई फर्क नहीं दिखाई देता था. हम वापसी में बहुत सारी यादें लेकर आये है जो हमे हमेशा जीवन में म.ए की डिग्री की याद दिलाएगा।

25 मार्च 2024

25 मार्च 2024 वापस जाने का दिन एक तरसे वापस घर जनेके उत्सुकता भी थी और थोड़ा ढुक भी हो रहा था की ये हमरी टूर का अकरी दिन था।

सुभे के 5 बजे हमरी ट्रेन नीजमुडीन स्टेशन से गोवा के लिए निकाल गयी हमरी ट्रेन का नाम त्रिवननंतपुरम एक्सप्रेस था।

कुली से थोड़े सामान पोहोचने के लिए बैचिट हुआ पर हम हट से ही सामान ले कर आये।

हम सभी लोग ट्रेन फे 4 बजके 50 मीन पर ट्रेन पे छड़े । हमारी ट्रेन मथुरा जंक्शन से होती हुई ,सूरत ,पनवेल, रत्नागिरी ,करमाली से मडगो स्टेशन पे 10:30 बजे पोहोचि । हमने आते समाये सिर्फ दिली महे हमरे वह कसे गए ये याद करते अरहे थे हमे लगा की ट्रेन को जाइए जानेमहे 2 दिन लगे थे वेसे आने महे भी 2 दिन लगेंगे लेकिन इस ट्रेन को जादा स्टॉप नहीं थे इस ले हम जल्दी फोचा गए हमे ट्रेन महे जादा तर समय सो कर नीकाल । मौजे तो अफे घर की और घर के खनेकी भोत याद आरही थी उयदर का पनि के वजेसे मेरे बल एकदम रूखे सूके हो गए थे । लेकिन हमरे गोवा जैसे किस और प्रदेश महे बात नहीं है ।

धन्यवाद ।